## 7. In a grove most rich of shade Poem by Sir Philip Sidney

|  | $\bigcirc$ |  |  |  |  | (6) |  |  |  |  |
| :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: |
| $\theta^{\circ}$ |  |  |  |  |  |  |  |  | $b$ | 0 |
| - | In | a | grove | most | rich | of | shade, | where | birds | wan- |
|  | As- | tro- | phel | with | Stel- | la | sweet | did | for | mu |
|  | Him | great | harms | had | taught | much | care | her | fair | neck |
|  | Wept | they | had, | a- | las, | the | while, | but | now | tears |
|  | Sigh'd | they | had: | but | now | be- | twixt | sighs | of | woe |
|  | Their | ears | hun- | gry | of | each | word | which | the | dear |
|  | But | when | their | tongues | could | not | speak, | Love | it- | self |
|  | Stel- | la, | sov- | 'reign | of | my | joy, | fair | tri- | um- |
|  | Stel- | la, | in | whose | shin- | ing | eyes | are | the | lights |
|  | Stel- | la, | whose | voice, | when | it | speaks, | sen- | ses | all |
|  | Stel- | la, | in | whose | bo- | dy | is | writ | the | char- |
|  | Grant, | O | grant, | but | speech | (a- | las) | fails | me, | fear- |
|  | Grant | (O) | dear) | on | knees | I | pray, | (knees | on | ground |
|  | $\mathrm{Ne}-$ | ver | sea- | son | was | more | fit, | ne- | ver | room |
|  | This | small | wind | which | so | sweet | is, | see | how | it |
|  | Love | makes | earth | the | wa- | ter | drink; | Love | to | earth |
|  | There | his | hands | in | their | speech | fain | would | have | made |
|  | There- | with- | al, | a- | way | she | went, | leav- | ing | him |



## 5




